INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in July 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

भारतीय संस्कृति विरासत को संजोये – सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला

निशा किरण, शोधार्थी, ललित कला विभाग, ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार] Nisha6kiran@gmail.com
डॉक्टर बीना दीक्षित, प्रोफेसर, ललित कला विभाग, ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार

सारांशः

सूरजकुंड मेला भारतीय सांस्कृतिक विरासत को अपने में संजोये हुए है । भारतीय शिल्पकला को एक नया जीवन दान देने में सूरजकुंड मेले ने अपना अहम् योगदान दिया है । सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय मेला भारत में ही नहीं बल्कि पुरे विश्व में अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता हैं। यह मेला प्रतिवर्ष फरवरी माह में 1 तारीख से 15 तारीख से बीच हरियाणा पर्यटन मंत्रालय के और से आयोजित करवाया जाता हैं। इस मेले में भारत के ही नहीं अपितु दुनिआ के अनेको देशो से कलाकार और शिल्पकार आते है जो अपनी लोक कलाओ तथा अपनी हस्त कलाओ का प्रदर्शन करते है । सूरजकुंड मेला भारतीय सांस्कृतिक विरासत को एक रंग बिरंगे रूप में देश और दुनिआ के सामने प्रदर्शित करता है यह मेला भारतीय शिल्पकला, कास्तकाला, हथकरघा व् अन्य लोक कलाओ को एक नए रूप में दिखता है ।इस मेले के प्रभाव से भारत की लुप्त होती संस्कृति को एक नया जीवन मिल गया है, सूरजकुंड मेले विश्व में लगने वाले मेले में से सबसे बड़ा मेला है इसलिए इस मेले को अंतर्राष्ट्रीय मेले का दर्जा दिया गया है । अगर कोई भारत की संस्कृति और लोक कलाओ को जानना चाहता है तो सूरजकुंड मेला उसके लिए एक उत्तम जगह है ।

मेले में हर वर्ष एक थीम राज्य होता है तथा मेले के मुख्य द्वार से लेकर इसकी वास्तु कला व् अन्य कलाओ में उसी राज्य की झलक देखने को मिलती है इस मेले के आयोजन का मुख्य उद्देश्य भारत की सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखना है और हमारी लोक परम्पराये व् अपनी संस्कृति आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना है ताकि हमारी आने वाली पीढ़िया हमारी संस्कृति को जीवित रखने के अपना योगदान दे।

कीवर्डः– शिल्प कला, संस्कृति, विरासत हतकरघा, अन्तर्राष्ट्रीय, सूरजकुंड

परिचयः–

फरीदाबाद का सूरजकुंड मेला भारत की सबसे प्रतिष्ठत मेलो में एक है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सूरजकुंड मेले की अपनी अलग ही पहचान है। इसे षिल्प कलाओं का जीवनदाता भी कहा जाता है। सूरजकुंड मेला षिल्प कलाओं यहा तक कि विदेषी कलाओं का भी प्रतिनीधितव करता है। प्रतिवर्ष यह मेला फरवरी माह में एक से पंद्रह तारीक के बीच आयोजित किया जाता है। इसका आयोजन हरियाणा पर्यटन मंत्रालय के द्वारा किया जाता है।

सूरजकुंड मेला – भारतीय संस्कृति की झलक

सूरजकुंड मेला भारत की विभिन्न सांस्कृतिक और कलातमक परम्पराओं को एक रंगबीरंगे रूप को दर्षता है। यह मेला भारत की षिल्प कला, सौंदर्य कला, कास्ट कला, हथकरघा उद्योग व अन्य तरह की कलाओं का देखने और समझने की मौका देता है। इस मेले से भारत के लोग अपने देष की ही नही बल्कि विदेषी कलाओं से परिचित होते है। सूरजकुंड मेला विष्व में लगने वाले सभी मेलों में से सबसे बडा है। सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से सूरजकुंड मेला अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना अलग ही महत्व रखता है।

इतिहास

सूरजकुंड मेले की शुरूआत 1987 में हुई थी मेले मे भारत की स्थानीय कारीगरों और कलाकारों के साथ विदेषों से आने वाले कलाकारों और कारीगरों का मेल देखने को मिलता है। सूरजकुंड मेला भारतीय सांस्कृतिक विरास्त को अपने में संजोये है। भारतीय षिल्पकला को एक नया जीवन देने में सुरजकुंड मेले ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। सूरजकुंड अन्तर्राष्ट्रीय षिल्प मेला भारत ही नही पूरे विष्व में अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यह हर वर्ष फरवरी माह में 1 से 15 फरवरी के बीच लगता है इसमें देष के षिल्पकारों और कलाकारों को अपनी कला को दुनिया तक पहुचाने का एक सुनहरा मौका मिलता है। भारत से अपना असतित्व खो चुकी षिल्प कालाओं और अन्य कलाओं को एक नया जीवन मिला है तो सिर्फ सूरजकुंड मेले की वजह से। आज भारत की काष्ट कला, मिट्टी के बर्तन, हथकरघा उद्योग को एक नया आयाम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मिला है। भारत के लोगों का यह मेला अपने षिष्व और अन्य कलाओं को विस्तार देने का एक अनोखा मंच है। मेले की विषेषता इस बात पर भी निर्भर करती है कि प्रतिवर्ष भारत के किसी एक राज्य की थीम स्टेट का दर्जा मिलता है और उसी पर मेले की सजावट इसकी वास्तुकला और मेले का माहोल निर्भर करता है।मेले में बनने वाले सभी मुख्य द्वार थीम राज्य से प्रेरित होते है।

यह मेला उच्च गुणवत्ता वाले हस्त षिल्प के लिए बहुत मषहूर है। भारत की षिल्प कला और अन्य कलाओं की एक पीढी से दूसरी पीढी तक पहुचाने के लिए इस मेले ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सूरजकुंड अन्तर्राष्ट्रीय मेला अपने देष की सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखे हुए है। कला के शौकीन लोगों के लिए सूरजकुंड मेला एक अदभुत अनुभव लेकर आता है।

भारत की संस्कृति के दर्शाती सूरजकुंड मेले की कुछ झलकियां

बांस से बना सामान **भारतीय चित्रकला का स्टाल**

INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in July 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

हाथ से बना सजावट का सामान

पत्थर से तराशी गई गुड़िया और अन्य खिलोने

दक्षिण भारत की संस्कृति को दिखाता एक स्टाल

राजस्थान के लोक नृत्य का प्रदर्शन करते लोक कलाकार

सूरजकुंड मेले की विशेषताएं

- सूरजकुंड शिल्प मेले में देश की हर लोक संस्कृति के दर्शन होते है
- यह मेला छोटे कलाकारों को अपनी कला का प्रदर्शन करने का मौका देता है
- इस मेले में लुप्त हो चुकी कलाये भी जीवनदान पाती है
- देश को छोटी लोक कलाओ को दुनिआ के सामने लाया जाता है
- युवा पीढ़ी हमारी पुरातन संस्कृति से जुड़ जाती है

2023 में आयोजित हुए सूरजकुंड मेले का मुख्य आकर्षण

- काष्ट कलाः– नारियल के खोल से बने बर्तन व सजावट का सामान
- हथकरघा उद्योग– मेधालय का स्टॉल – साफट वुड से बने गुलदस्ते। हस्तषिलपी कलाकार भुट्टे के छिलकों और साफट वुड
- गोपाल प्रसाद शर्मा द्वारा निर्मित चौबीस कैरेट सोने से बना राम दरबार ए कीमत पांच लाख से ऊपर

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र के लिए प्राथमिक तोर पर समाचार पत्र पत्रिकाओं, किताबो, शोध पत्रिकाओ से लिया गया है ! इसके आलावा लोगो से भी उनके विचार लिए गए है ताकि हमें पता चले की हमारी संस्कृति के विषय में लोगो का क्या मानना है !इस पत्र के लिए सौ लोगो से एक साक्षात्कार के जरिये ये जानने की कोशिश की गई है की सूरजकुंड शिल्पमेला हमारी सांस्कृतिक विरासत को कैसे संजोये हुए है और इस मेले केआयोजन का क्या आयौचित्य है ,किस प्रकार ये मेला हमारी सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक माना जाता है !

विश्लेषण और व्याख्या

इस साक्षात्कार में शामिल होने वाले लोगो में 65% पुरुष , 35% महिलाये शामिल थे ३०% लोगो का ये कहना था की सूरजकुंड मेले की वजह से ख़त्म होती भारत की पुरातन संस्कृति को जीवित रखा जा रहा है, इसमें सभी राज्यों की वो कलाये भी देखने

को मिलती है जो अब लुप्त सी हो गई है जैसे चरखा,मिटटी के बर्तन, लकड़ी की खाट , चाकी ,हल इत्यादि ! आज के समय में हल और चाकी की जगह ट्रैक्टर और मशीनी चकियो ने ले ली है , हमारी युवा पीढ़ी को हमारी पुराणी संस्कृति दिखाने के लिए सूरजकुंड मेले से बेहतर कोई जगह नहीं है क्योकि यहाँ एक की जगह हमारे भारत की सभी संस्कृतियों का संगम देखने को मिलता है ! महिलाओ का ये मत था की देश की संस्कृति को युवा पिढ़ी तक पहुँचाने के लिए इस प्रकार के मेलो का आयोजन केवल एक राज्य में ही नहीं बल्कि सभी जगह करने चाहिए ताकि लोग सभी राज्यों की लोक संस्कृतियों से अवगत हो सके | सूरज कुंड मेला हमारे भारत की सभी लोक कलाओ और संस्कृतियों को एक सूत्र में बांध कर रखता है , इसके आँचल में भारत ही नहीं बल्कि दुनिआ के अन्य देशो के कलाये भी अपना अस्तितव बनाये हुए है । सूरजकुंड मेले ने भारत की कुछ लोक कलाओ को दुनिआ के पटल पर एक अलग ही पहचान दी है ।

निष्कर्ष:–

सूरजकुंड अन्तर्राष्ट्रीय षिल्प मेला भारतीय सांस्कृतिक विरासत को जीवनदान देने में अपनी भूमिका निभा रहा है। यह मेला प्रतिवर्ष हर राज्य की लोक संस्कृति को प्रदर्षित कर लोगों का उस राज्य की संस्कृति से अवगत कराता है। ताकि अन्य राज्यों के युवा हमारी पुरातन संस्कृति से परिचित हो। यह मेला भारत की सांस्कृतिक धरोहर से विदेषों की भी अवगत करवाता है ताकि हमारी भारतीय संस्कृति को दुनिया में प्रसिद्व किया जा सके। भारतीय सांस्कृतिक विरासत को एक ही पटल पर देखना हो तो सूरजकुंड अन्तर्राष्ट्रीय मेला एक उचित स्थान है। सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला भारत की संस्कृति को देश ही नहीं दुनिआ के कोने कोने तक पहुँचाने में सफल हो पाया है इस लिए एक मेले को अंतर्राष्ट्रीय मेले का दर्जा मिला है ! दुनिआ भर के देश प्रतिवर्ष इस मेले का इंतजार करते है ए इस मेले की वजह से भारत में लुप्त होने की कगार पर पहुंची कुछ कलाओ को एक नया जीवन मिला है ! आज उत्तर प्रदेश की पत्थर की मूर्तिया दुनिआ भर में अपना वर्चस्व कायम कर चुकी है ! भारत में बनी कश्मीरी साडियो का आज एक बहुत बड़ा बाजार है ! भारत में बने लकड़ी की खिलोनो की आज दुनिआ भर में मांग है !

सन्दर्भ सूचि

- डा . पियूष शर्मा और डा . महेश, Vol. 02, issue 02, July-Dec 2017
- चित्रांगद कुमार, PSA Journal(Vol. 83, Issue 5)
- कल्चरल टूरिज्म : ए स्टडी ऑफ़ सूरजकुंड इंटरनेशनल क्राफ्ट्स फेयर , तुर्किश ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ क्वालिटेटिव इन्क्वायरी (Volume 12, Issue 9, August 2021: 186-194
- डैन , जेएम (१९७७) अहंकार - वृद्धि और पर्यटन , पेज संख्या १८४-१९४
- कला और सौंदर्य .डॉक्टर प्रेमलता कश्यप .स्कोलारी रिसर्च जर्नल फॉर इंटरडिस्किपिलरी स्टडीज 2021
- भारतीय कला अवं संस्कृत विविध आयाम डॉक्टर बिना जैन ISBN 9789390179046ए एडिशन 2020